MAHARAJA COLLEGE ,ARA

UG @ SEM- II

MJC-2 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

Unit – 1 विद्यापति (विद्यापति पदावली, संपा : रामवृक्ष बेनीपुरी)

विद्यापति (1350–1448)ई.

प्रारंभिक जीवन :– विद्यापति आदिकाल के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका जन्म 1350 ई. में दरभंगा जिला के 'बिसपी' नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता पंडित गणपति ठाकुर मिथिला नरेश गणेश्वर सिंह के सभा पंडित थे। विद्यापति अपने पिता के साथ बचपन से ही राज दरबार में आया–जाया करते थे। गणेश्वर सिंह के बाद उनका पुत्रा कीर्ति सिंह राजा हुए। विद्यापति का आना–जाना कीर्ति सिंह के दरबार में भी लगा रहा। इसी दौरान विद्यापति ने राजा कीर्ति सिंह के नाम पर अपनी पहली कृति 'कीर्तिलता' की रचना की। 'कीर्तिलता' कवि के तरुणावस्था की रचना है। इस ग्रंथ की भाषा संस्कृत प्राकृत मिश्रित मैथिली है। कवि ने इस भाषा का नामकरण 'अवहट्ठ' किया है।

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

''देसिल बअना सब जन मीट्ठा।
ते तैसन जम्पओं अवहट्ठा ।।''

प्रधान आश्रायदाता :– विद्यापति के प्रधन आश्रयदाता राजा शिवसिंह थे। इन्ही की छत्रा–छाया में रहकर विद्यापति ने अपने अधिकांश पदों की रचना की । वे अपने पदों में राजा शिवसिंह और उनकी पत्नी लखिमा देवी का नाम देकर उन्हें अमर कर दिया। विद्यापति ने अपनी प्रतिभा और विद्वता से दिल्ली के तत्कालीन सम्राट गयासुद्दीन तुगलक को प्रसन्न करके राजा शिवसिंह को उनके बंधन से मुक्त करवाया था। फलस्वरुप राजा ने इनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इनका यथोचित सम्मान किया। इन्हें 'अभिनव जयदेव' की उपाधि से विभूषित किया और बिसपी नामक गाँव दानस्वरूप प्रदान किया । यही गाँव कवि का जन्म–स्थल है।

उपाधियाँ :– विद्यापति हिंदी के एक मात्रा ऐसे कवि हैं जिन्हें संभवतः सबसे अधिक उपाधियाँ प्रदान की गई। 'अभिनव जयदेव, कविशेखर, कविकंठाहार, कविरंजन, राजपंडित, सरस कवि, कविरत्न, नवकवि, मैथिल कोकिल'

सरीखे अनेक उपाधियाँ लोकप्रसिद्ध है।

रचनाएँ :– विद्यापति संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मैथिली भाषा के प्रकांड विद्वान थे। इन भाषाओं पर उनका समान अधिकार था। उनकी प्रधान रचनाएँ निम्नलिखित है–

अवहट्ठ :– कीर्तिलता, कीर्तिपताका ।

संस्कृत :– शैवसर्वस्वसार, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा, लिखनावली, विभागसार, दानवाक्यावली, गंगावाक्यावली, दुर्गाभक्ति तरंगिणी आदि।

मैथिली :– पदावली।

मुख्य रचनाओं का विवेचन :– 'कीर्तिलता' राजप्रशस्ति परक ऐतिहासिक काव्य है। इसमें कीर्तिसिंह के राजप्राप्ति के प्रयत्नों का वर्णन है। 'कीर्तिपताका' कीर्तिसिंह की प्रेम–गाथा पर आधरित है। 'शैवसर्वस्वसार' शैव–दर्शन से संबंधित है। 'भूपरिक्रमा' राजा शिवसिंह की आज्ञा से लिखित भूगोल

संबंधी ग्रंथ है। 'पुरुष परीक्षा' में कवि ने दण्डनीति का विश्लेषण किया है। और 'लिखिनावली' में चिट्ठी–पत्री लिखने का निर्देश है।

विद्यापति के प्रसिद्धि का आधर पदावली है। पदावली में मुख्य रूप से श्रृगांर और भक्ति संबंधी रचनाएँ संकलित है। इसके अलावा कवि ने प्रकृति चित्रण के साथ–साथ तत्कालीन समाज की विसंगतियों की ओर भी संकेत किया है–

''पिया मोर बालक हम तरुनी ।
कोन तप चूकि भेलहुँ जननी ।।''

भक्त या श्रृंगारी :– कवि ने पदावली में कृष्ण, शिव, दुर्गा, गंगा आदि देवी–देवताओं की स्तुति की है। उनकी भक्ति किसी एक पंथ या संप्रदाय से बंधी हुई नहीं थी। वे एक साथ शैव, शाक्त और वैष्णव थे। वे शिव और विष्णु एक ही रूप की दो कलाएँ मानते थे। अपने एक पद में कवि ने इसका चित्राण इन शब्दों में किया है–

MAHARAJA COLLEGE ,ARA

''भल हरि भल हर भल तुअ कला।
खन पित बसन खनहि बघ छला।।''

वहीं, दूसरी तरफ पदावली के अधिकतर पद श्रृंगारिक भावनाओं को अपने में समेटे हुए है। यहाँ तक कि, राधा और कृष्ण का वर्णन भी श्रृंगार रस को ही उजागर करता है। राधा और कृष्ण को वे साधरण नायक–नायिका के रूप में चित्रित करते हैं। इनकी श्रृंगारिक प्रवृतियाँ इतनी प्रवल है कि अधिकतर विद्वानों ने इन्हें भक्त कवि न कहकर श्रृंगारी कवि कहा है। इसके साथ ही हिंदी साहित्य के इतिहास में एक नया विवाद खड़ा होता है।

विद्यापति मूलतः सौंदर्य और प्रेम के कवि हैं। कवि का ध्यान श्रृंगार के चित्रण में अधिक रमा है। श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग और वियोग चित्रण में उन्हें पूरी सफलता मिली है। नारी के अंग–प्रत्यंग का जितना रसपूर्ण और मांसल चित्रण इन्हों ने किया है, उतना किसी अन्य कवि ने नहीं । उनके कई पद तो ऐसे हैं जिनका वर्णन बच्चों या

बड़ों के सामने करने में हिचक होती है।

बहुज्ञता :– विद्यापति के ग्रंथों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि वे बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। वे अनेक विषयों के ज्ञाता थे। भूगोल, इतिहास, नीतिशास्त्र, व्यवहारिकज्ञान, काव्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, कामशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों की इन्हें अच्छी जानकारी थी। विद्यापति के काव्य में वीरता, भक्ति, नीति और श्रृंगार की प्रवृतियाँ एक साथ मिलती है।

उपसंहार :– विद्यापति का व्यक्तित्व जितना विवादित रहा है, हिंदी साहित्य के इतिहास में शायद ही किसी कवि का व्यक्तित्व उतना विवादित रहा हो। 'भक्त या श्रृंगारी' कवि होने का विवाद हो या 'दरबारी और जनकवि' होने का विवाद या 'मैथिली, हिंदी और बंगला भाषा के कवि' होने का विवाद किसी ने उनकी प्रसिद्धि को घटाया नहीं, वरण् एक हद तक फैलाया ही। अतः निर्विवाद है कि विद्यापति रससिद्ध कवि हैं।